Newspaper: Nai Dunia
Edition: Delhi | Page no: 4 | Date: 7th October 2016

छत्तीसगढ़ में बस्ते का बोझ कम करने का नया फॉर्मूला, तीन महीने के लिए एक किताब

राहत : स्कूल शिक्षा विभाग ने शासन को दिया भेजा प्रस्ताव, सालभर के पाठ्यक्रम को 3-3 महीने की एक किताब में छापने का सुझाव

अनिल मिश्रा। रायपुर

नईदुनिया एक्सक्लूसिव

बस्ते के बोझ से दोहरे हुए जा रहे प्रदेश के नौनिहालों के लिए खुशखबरी है। स्कूल शिक्षा विभाग उनके कंधों का बोझ कम करने योजना बनाकर शासन को भेज चुका है। नए सत्र से कई किताबों में बिखरे उनके पाठ्यक्रम को तीन हिस्सों में बांटकर पढ़ाया जाएगा। यानी जितनी भी किताबें हैं, उनको तीन किताबों में बांट दिया जाएगा। इस तरह हर तीन महीने में केवल एक किताब बस्ते में रहेगी, जो बोझ नहीं रह जाएगी।

छत्तीसगढ़ समेत पूरे देश में स्कूल बैग का बढ़ता वजन बड़ा मुद्दा है। बैग का भार बच्चे के वजन के 10 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होना चाहिए लेकिन हकीकत में ये 30 से 40 प्रतिशत तक भारी हो चला है। साल दर साल यह वजन बढ़ता ही जा रहा है। इसके चलते बच्चे बीमार पड़ रहे हैं। उनके स्पाइनल कार्ड में समस्या होने से प्राकृतिक वृद्धि में रुकावट हो र ही है। हालात देख राज्य सरकार ने 9 सितंबर को सभी कलेक्टरों को निर्देशित किया है कि वे निजी स्कूलों को बस्ते का बोझ कम करने कहें। चिंता की बात ये है कि कहीं यह कवायद भी फाइलों में गुम न हो जाए, इसलिए स्कूल शिक्षा विभाग ने प्रयास शुरू किए हैं। शिक्षा का अधिकार कानून की धारा 16 व 17 में यह साफ है कि किसी भी बच्चे को मानसिक या शारीरिक रूप से टॉर्चर नहीं किया जा सकता।

बस्ते को लेकर सरकारी निर्देश

कक्षा	बस्ते का वजन
पहली से पांचवीं	3 किलो
छठवीं से आठवीं	4 किलो

विशेषज्ञ कह रहे इनको भी किया तो बड़ी सफलता

- स्कूलों में शुद्ध पेयजल की सुविधा हो, ताकि बच्चों को बस्ते में पानी की बोतल लेकर न आना पड़े।
- किफायती दामों पर अगर मेस की सुविधा हो तो एक या दो बार घर से टिफिन लाने से मुक्ति मिल सकती है।
- खेल उपकरण स्कूल से ही मिले तो अभिभावकों का पैसा बचेगा और बच्चों को इन्हें टांग कर लाने- ले जाने से मुक्ति मिलेगी।
- साइंस प्रोजेक्ट या फिर अन्य विषयों के मॉडल घर से बनवाकर सहेजते हुए लाना भी त्रासद होता है। यह काम भी स्कूल में ही करवाया जाए।
- अमूमन हर महीने ही होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों व अन्य गतिविधियों के प्रॉक्स भी स्कूल में ही उपलब्ध कराए जाएं।

रैक की भी योजना

पूरे कोर्स को तीन भागों में बांटने के अलावा स्कूलों में रैक बनाने की भी योजना है। इसमें बच्चों की किताबें और कॉपियां स्कूल में ही सुरक्षित रखी जाएंगी।

-केदार कश्यप, मंत्री
स्कूल शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन